अमर उजाला कानपुर देहात 30/06/2024

बारिश होने से किसानों के चेहरे खिले, धान की बुआई की तैयारी

धान की बेल में बारिश का पानी भरता किसान। संवाद

पुखरायां। समय से बारिश होने पर किसानों के चेहरे खिल उठे। बारिश धान की बेल तैयार करने के लिए वरदान साबित हुई है। इस समय किसान धान बुआई की तैयारी कर रहे हैं। अभी तक बारिश न होने से धान रोपने के लिए बोई गई बेल की किसान नलकूप का सहारे लेकर पानी दे रहे थे।

किसान श्रीपाल सोनकर, अखिलेश सचान, रामबाबू सिंह यादव, अश्वनी शुक्ल आदि ने बताया कि नलकूप के पानी से धान की बेल पीली दिख रही थी। समय से बारिश हो जाने के कारण बेल में रौनक आ गई जो हरी दिखने लगी।

जिसमें निरंतर बदलाव होता जा रहा है। बारिश का पानी भी टिकाऊ हो गया। अब और भी बेल तैयार करने के लिए बुआई की जा रही है। इसी तरह बारिश होती रही तो धान की रोपाई भी अच्छी तरह से हो जाएगी। बीच बीच में अच्छी बारिश हो जाने पर फसल भी अच्छी होगी। वहीं खेतों में नमी (ओठ) आने पर उर्द, तिली, लुबिया, अरहर की भी बुआई समय पर हो जाएगी। (संवाद)

ऊसर में उगाए सहनशील धान प्रजाति

कानपुर देहात। कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों ने औरंगाबाद में शनिवार को किसानों को ऊसर में सहनशील धान की तकनीकी खेती का प्रशिक्षण दिया। बताया कि यह प्रजाति ऊसर खेत में रोपने से बंपर पैदावार होती है।

निकरा परियोजना अंतर्गत यह विशेष प्रशिक्षण आयोजित हुआ। यहां कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने औरंगाबाद के किसानों को बताया कि ऊसर सहनशील धान की प्रजातियों ही ऊसरीली भूमि में उगानी चाहिए। बताया कि ऊसर भूमियों में पीएच मान 8 से 9 के मध्य होता है। ऊसर सहनशील प्रजाति सीएसआर 46 सर्वोत्तम है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि ऊसर में 15 टन गोबर की खाद अवश्य मिला दें। तैयार खेत में 30 से 35 दिनों की पौध रोपना सही रहता है। 30 किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग भी लाभकारी होता है। यहां उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बेर, बेल एवं आंवला आदि की खेती के सुझाव दिए। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियों के बारे में जानकारी दी। यहां गौरव शुक्ला, शुभम यादव, भगवान पाल प्रगतिशील किसान संतराम, गोबिंद, रघुवीर, राजेश आदि रहे। (संवाद)

पीली पड़ रही बेड़ तो करें चूना घोल का छिड़काव

कानपुर देहात। नर्सरी में धान की बेड़ में सफेद / पीलापन आ रहा है तो किसान इसका उपचार कर सकते हैं। नर्सरी में बेड़ की गुणवत्ता बनी रहे इसके लिए फेरस सल्फेट व चूना घोल का छिड़काव किया जा सकता है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि अधिक गर्मी पड़ने की वजह से नर्सरी में धान की बेड़ में सफेद/ पीलापन दिखाई दे रहा है। इससे बेड़ की गुणवत्ता खराब हो रही है। उन्होंने बताया कि 0.5 फीसदी फेरस सल्फेट व 0.25 फीसदी चूना का घोल बनाकर बेड़ पर छिड़काव कर दें। (संवाद)